चोल प्रशासन

[9th lecture.]

BA. HONS.
PAPER- I.

– ममता रानी
(इतिहास विभाग)
एस. एन. एस. आर. कॉलेज. सहरसा

Scanned with CamScanner

चोल प्रशासन

Ajanta
Page No. 1
Date

→ केन्द्रीय शासन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति राजा था। सार्वजनिक प्रशासन में राजा की मूर्ति का मौखिक आदेशों के रूप में थी। शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। समाज में सरकारी अधिकारियों का एक अलग वर्ग था। जो दो श्रेणियों में थे —

1. ऊपरी श्रेणी पेरुन्दनम
2. निम्नस्तर श्रेणी शेरुन्तरम कहलाती थी। सरकार पद वंशानुगत होते थे।

→ राजा के व्यक्तिगत अंगरक्षकों को वेडक्कार कहा जाता था। अधिकारियों को वेतन की जगह जमीन दी जाती थी। राज्य के उच्चाधिकारियों को उडनकूट्टम कहा जाता था।

—: प्रशासनिक विभाग :—

→ प्रशासन के सुविधा के लिए चोल साम्राज्य 6 विभागों में विभक्त था। प्रांत को मंडलम् कहा जाता था। मंडलम् वलनाडु (जिला) या-नाडु में, नाडु - कुर्रम में विभक्त था। इस प्रकार अवरोही क्रम में चोल साम्राज्य की प्रशासनिक इकाईयां थी मण्डल, वलनाडु, नाडु, कुर्रम, कोट्टम।

→ बड़े - बड़े शहर या गांव स्वयं एक अलग कुर्रम बन जाते थे जो तनियुर या तंकुरम् कहलाते थे। नाडु की स्थानीय सभा को नट्टार या व्यापारिक संघ की सभा को नगरट्टार कहते थे।

—: राजस्व व्यवस्था :—

→ राजा की आय का प्रमुख साधन भूमिकर थी, जिसे ग्राम सभाएं वसूल करती थी। कृषि उत्पादन का

Scanned with CamScanner

तिहाई भू-राजस्व के रूप में वसूल किया जाता था। चोल सम्राट राजराज तथा कुलोत्तुंग ने भूमि की नाप करवायी थी।

→ उपज के अनुसार भूमि का कुल 12 कोटियों में विभाजित किये जाने का विवरण मिलता है।

→ भूमि कर के अतिरिक्त चोल राज्य व्यापारकर तथा निकटवर्ती क्षेत्रों की लूटमार से आय बढ़ाते थे। विवाह समारोह पर कर लगता था। अभिलेखों में करों और वसूल के लिए उपर्युक्त शब्द, हरै या बरी, मनछपाडु और दण्डमहै।

→ अन्न का मान एक कालम (तीन मन) था। सोने के सिक्कों को कासु कहा जाता था। वेलि भूमि की इकाई थी। राजस्व विभाग का प्रमुख अधिकारी वरित्पोत्तगक कहलाते थे। नगरों में कर संग्रह का उत्तरदायित्व नगरम् समिति के अधीन होता था। चोल नरेश केन्द्रीय राजस्व का उपयोग प्रायः विशाल मंदिरों के निर्माण, बन्दरगाहों, समुद्री जहाजी बेड़ा पर अधिक करते थे।

—: सैन्य संगठन :—

चोल सेना तीन भागों में विभक्त था —

(a) पैदल (b) अश्व सेना (c) हस्ति सेना

सेना की विभिन्न टुकड़ियाँ अलग-अलग छावनियों में निवास करती थी। चोल सेना में सभी वर्णों के व्यक्ति सम्मिलित थे।

- सेना के टुकड़ियों के प्रमुख को नायक, प्रधान सेनापति को दण्डनायक कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

बल सेना :-

धनुर्धर (विल्लिगल), गजारोही (कल-कुजीरिमल्लम), घुड़सवार (कुदिरैच्चेवगर) पैदल सेना। सेना में सेनापति ब्राह्मण थे जिन्हे ब्राह्मणाधिराज कहते थे। न्याय समिति को न्यायातर कहा जाता था।

स्थानीय स्वशासन :-

→ चोल सम्राट परान्तक के शासन के 12वें एवं 14वें वर्ष के प्रसिद्ध उत्तरमेरूर अभिलेख से चोल कालीन स्थानीय स्वशासन एवं ग्राम प्रशासन व्यवस्था का समग्र चित्र उपलब्ध है। चोल सम्राटों ने स्थानीय स्वशासन व्यवस्था समिति प्रणाली को लागू किया जिसे वरियम कहा जाता था।

→ चोल अभिलेखों में मोटे तौर पर तीन ग्राम सभाओं का उल्लेख प्राप्त होता था है। उर, सभा या महासभा, नगरम्। इस काल के स्थानीय स्वशासन में उर तथा सभा वरिष्ठ सदस्यों द्वारा निर्मित होती थी।

→ उर एक सामान्य प्रकार की ग्राम सभा थी। सभा या महासभा. नगरम। इस काल के स्थानीय स्वशासन में उर तथा सभा वरिष्ठ सदस्यों द्वारा निर्मित होती थी।

→ उर एक सामान्य प्रकार की ग्रामसभा थी। सभा या महासभा में गांवो के वरिष्ठ ब्राह्मणों जिन्हे अग्रहार कहा जाता था। गाँवो के कारोबार की देखभाल एक कार्यकारिणी समिति करती थी। जिसे वरियम कहा जाता था।

=*=